भारतीय अध्यात्म की अद्भुत कृति 'जपुजी साहिब'

[1]डॉ॰ रविन्द्र गासो

शोध सारांश

हिन्दी और पंजाबी की मध्यकालीन सन्त-काव्य धारा के प्रमुख स्तम्भ और सिक्ख पंथ के संस्थापक श्री गुरु नानक देव जी (1469 ई॰-1539 ई॰) द्वारा रचित 'जपुजी साहिब' विश्व-साहित्य की अनुपम रचना है। यह श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी के प्रारम्भ में दर्ज़ है। सिक्खों द्वारा किए जाने वाले नितनेम (नित्य-नियम) की वाणियों में यह सर्वप्रथम व सर्वप्रमुख है। गुरुवाणी के समस्त सिद्धान्तों का यह मूल स्रोत है। यह रचना 'ईश्वर' के स्वरूप, ईश्वर की कुदरति, ईश्वर द्वारा बनाई सृष्टि, सुरति, ज्ञान, विचार, ईश्वर के हुक्म, ईश्वर के कर्मों की अनन्तता, ईश्वर 'नाम' की महत्ता, 'नाम' सुनने, 'नाम' को मानने की 'गति', सन्त, सतिगुरु की शोभा, जीवात्मा के कर्मों का फल, ईश्वर की कृपा का महत्त्व, प्रभु स्तुति के आयाम, भक्ति का स्वरूप, आत्मिक-योग की विशेषताएँ, आत्मा की पाँच अवस्थाएँ (पड़ाव), पवित्र आचरण की महती साधना आदि पर गहन-गंभीर दार्शनिक प्रवचन है। गुरु नानक देव जी के लम्बे अध्ययन-अनुभव, ध्यान, चिन्तन-मनन का परिणाम यह सुन्दर अनुपम-अपूर्व काव्य है।

'जपुजी साहिब' गुरु नानक जी का महा-संवाद है। यह महा-संवाद उनका पूरी लोकाई के साथ है। इस संवाद की बहुत तहें-परतें हैं, क्षितिज से भी परे की दुनिया है, पारावार से भी विशाल गहरी गहराई है। इस महासंवाद के प्रश्न भी अल्टीमेट (ultimate) हैं।

'जपुजी साहिब' की व्याख्या-विश्लेषण को गुरवाणी के विद्वानों ने 'टीका' कहा है। 'जपुजी साहिब के अंदाजन पचास से ज्यादा 'टीके' उपलब्ध हैं। भाई सन्तोख सिंह ने पहली बार टीका (भावार्थ) लिखा जिसका नाम था 'गरब गंजनी' (पंजाबी में)। अर्थात् जो भी मनुष्य 'जपुजी साहिब' के टीके की व्याख्या को पढ़ेगा, उसका सब प्रकार का अहंकार मिट जायेगा। इसके बाद उदासी, और निर्मल सम्प्रदाय, फरीदकोट के सन्तों के 'टीकों' के बाद प्रसिद्ध पंजाबी कवि भाई वीर सिंह, प्रिंसीपल साहिब सिंह, सन्त विनोबा भावे, आचार्य रजनीश का 'जपुजी साहिब' का 'टीका' आया। सभी ने अलग-अलग दृष्टियों से इस ईश्वरीय ज्ञान के सागर में से डुबकी लगाकर अपनी-अपनी तरह से ज्ञान के मोतियों को चुगा है।

विद्वानों ने इसकी समानता उपनिषदों और श्रीमदभगवद्गीता से की है। निश्चित ही यह भारतीय अध्यात्म की अद्भुत कृति है।

मूल शब्द : जपुजी साहिब, साहित्य, भारतीय अध्यात्म, सिक्ख पंथ ।

Correspondent author

[1]एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिन्दी-विभाग, डी. ए. वी. कॉलेज, *पूण्डरी (कैथल) कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र, ई. मेल:* gassoravinder@gmail.com *मो.:* 94161-10679.

मूल आलेख:

हिन्दी और पंजाबी की मध्यकालीन सन्त-काव्य धारा के प्रमुख स्तम्भ और सिक्ख पंथ के संस्थापक श्री गुरु नानक देव जी (1469 ई॰-1539 ई॰) युग-द्रष्टा, युग-स्रष्टा, युग-पुरुष थे। आपकी सम्पूर्ण वाणी (कुल 974 सबद) 'श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी' में संकलित हैं। आपकी काव्य-रचनाओं में 'जपुजी साहिब', 'सिध-गोसटि', 'आसा दी वार', 'सोदर', 'सोहिला', 'माझ दी वार', 'मल्हार की वार', 'दखणी ओंकार', 'बाबरवाणी', 'पटी', 'बारहमाहा', 'रामकली', 'थिती', 'आरती', 'कुचजी', 'सुचजी' आदि प्रमुख हैं।

'जपुजी साहिब' गुरु नानक देव जी की नहीं अपितु विश्व-साहित्य की अनुपम रचना है। यह श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी के प्रारम्भ में दर्ज़ है। सिक्खों द्वारा किए जाने वाले नितनेम (नित्य-नियम) की वाणियों में यह सर्वप्रथम व सर्वप्रमुख है। गुरुवाणी के समस्त सिद्धान्तों का यह मूल स्रोत है। विद्वानों का मत है कि श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी की वाणी 'जपुजी साहिब' का विस्तार है। यह रचना 'ईश्वर' के स्वरूप, ईश्वर की कुदरति, ईश्वर द्वारा बनाई सृष्टि, सुरति, ज्ञान, विचार, ईश्वर के हुक्म, ईश्वर के कर्मों की अनन्तता, ईश्वर 'नाम' की महत्ता, 'नाम' सुनने, 'नाम' को मानने की 'गति', सन्त, सतिगुरु की शोभा, जीवात्मा के कर्मों का फल, ईश्वर की कृपा का महत्त्व, प्रभु स्तुति के आयाम, भक्ति का स्वरूप, आत्मिक-योग की विशेषताएँ, आत्मा की पाँच अवस्थाएँ (पड़ाव), पवित्र आचरण की महती साधना आदि पर गहन-गंभीर दार्शनिक प्रवचन है। गुरु नानक देव जी के लम्बे अध्ययन-अनुभव, ध्यान, चिन्तन-मनन का परिणाम यह सुन्दर अनुपम-अपूर्व काव्य है।

इसके प्रारम्भ में मूल मन्त्र दिया हुआ है -

1ओं (एक ओंकार) सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु
अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि।

यह मूलमन्त्र 'जपुजी' का भाग नहीं है। प्रत्युत यह समस्त दीर्घ वाणियों एवं रागों के प्रारम्भ में दिया गया है। ईश्वर के स्वरूप के कुछ आवश्यक अंग इसमें हैं। इसका अर्थ है कि – 'परमात्मा केवल एक है; उसका नाम है शाश्वत; वह कर्ता पुरुष है; वह भय-रहित है; वह वैर-रहित है (वह प्रेम स्वरूप है); वह समय के प्रहार से परे है; वह योनि से परे है (न जन्म लेता है, न मरता है); वह स्वतः सत्तावान है; वह गुरु की कृपा से प्राप्त होता है।' [1]

'जपु' का आरम्भ एक श्लोक के साथ किया गया है। (नोट: 'जपु' इस वाणी का नाम है। इसमें जी और साहिब आदरार्थ हैं।) इसमें 38 पउड़ियां हैं। अन्त में भी एक श्लोक दिया गया है। आरम्भ में जो श्लोक है, वह इस प्रकार से है:-

आदि सचु जुगादि सचु।
है भी सचु नानक होसी भी सचु।। [2]

'ईश्वर' पर विचारों, कल्पनाओं -परिकल्पनाओं (लक्षित कल्पनाओं), परिभाषाओं-सूत्रों, विशाल, विस्तृत, अथाह, असीम, असीम से भी मुक्त, शब्द-रूप, 'शब्द' से भी पहले - परे, असंख्य, असंख्य से भी परे, ईश्वर का घर-द्वार (सो दरु केहा), नाम-निरंजन के सूत्रों की शुरूआत है यह।

'निर्गुण-निराकार' ईश्वर को समझना बहुत ही कठिन कार्य है। यह काम सन्त कबीर जी और गुरु नानक देव जी जैसी चेतना ही कर सकती है। एक ऐसी चेतना जिसके ज़हन में पूरा ब्रह्माण्ड, ब्रह्माण्ड से भी परे असंख्य ब्रह्माण्डों, लोक-त्रिलोक से भी परे असंख्य लोकों, पूरी मानवता का नक्श-नुहार हो, उसके प्रति प्यार हो।

गुरु नानक साहिब जी इस प्रथम श्लोक में फरमाते हैं - '(वह परमात्मा) आदिकाल से सत् स्वरूप है, सृष्टि के आरम्भ से सत्स्वरूप है। वह अब भी सत् है, (नानक) वह भविष्यत् काल में भी सत् रहेगा। [2]

'जपुजी साहिब' गुरु नानक जी का महा-संवाद है। यह महा-संवाद उनका पूरी लोकाई के साथ है। उन्होंने लम्बे चिन्तन, लम्बी धार्मिक-सांस्कृतिक यात्राओं (उदासियों), दीर्घ, गहन-गम्भीर संवाद-गोष्ठियों, प्रवचनों, सभी धर्मों-मतों के महान-स्थानों, महापुरुषों के पास प्रत्यक्ष जाकर, देख-परख के बाद यह अद्भुत-विलक्षण संवाद रचाया है। इस संवाद की बहुत तहें-परतें हैं, क्षितिज से भी परे की दुनिया है, पारावार से भी विशाल गहरी गहराई है। इस महासंवाद के प्रश्न भी अल्टीमेट (ultimate) हैं। 'जपुजी साहिब' की पहली पउड़ी में ही प्रश्न है; कैसे झूठ (कूड़) की दीवार टूटेगी, कैसे सत्य से मेल (सचिआरा) होगा? हुक्म (प्रभु का) क्या है? प्रभु-स्तुति की भिन्नताओं-विभिन्नताओं का नज़ारा क्या है? नाम क्या है? नाम सुनने से क्या-क्या होता है? 'नाम' मानने वाले की क्या अवस्था होती है? पंच (सन्त) का महत्त्व क्या है? प्रभु

के कर्मों (कौतुक) की गिनती क्या है? असंख्य, अक्षरों (भाषा) से परे है प्रभु – तो फिर क्या है? 'मति' की मैल कैसे धुल सकती है? सृष्टि कब बनी? प्रभु-स्तुति से क्या होता है? उसे (प्रभु से) कैसे कहें? माया से बंद-खलासी (मुक्ति) कैसे हो? प्रभु-कृपा का महत्त्व, रहस्य क्या है? 'प्रभु' के कौन-कौन, कैसे-कैसे कह गया, कह रहा है? नाम-निरंजन, तुरीय अवस्था, आत्मा की पाँच अवस्थाएँ (पड़ाव): धर्म खण्ड, ज्ञान-खण्ड, सरम (श्रम) खण्ड, कर्म खण्ड, सत्य-खण्ड क्या हैं? इन पाँच खण्डों का आधार पवित्र-आचरण क्या है? मानवीय जीवन की अल्टीमेट-परिभाषा क्या है? (पवणु गुरु पाणी पिता .....) आदि प्रश्न 'जपुजी' साहिब के महासंवाद का सौन्दर्य हैं।

किव सचिआरा होईऐ किव कूड़ै तुटै पालि .....

ईश्वर-परायण कैसे बना जाए, मिथ्या की भित्ति कैसे टूटे:

'जपुजी साहिब' की पहली पउड़ी में यह प्रश्न है कि सत्यवान (ईश्वर-परायण) अथवा सत्याचारशाली या कहें सदाचार-शाली कैसे बना जाए? 'मिथ्या की भित्ति कैसे टूटे?' इस प्रश्न का उत्तर अन्तिम पंक्ति में दिया गया है। बाबा नानक जी फरमाते हैं कि प्रभु के आदेश के अनुकूल आचरण करने से ऐसा संभव है। यह प्रभु का आदेश हमारी आत्मा में प्रभु की तरह पहले से लिखा हुआ है। क्योंकि परमात्मा भीतर बसता है, अतः उसका आदेश भी भीतर ही है। यह भीतर का शब्द तभी सुनाई देता है जब 'नाम' के बल से अन्तर-ज्योति जगती है। ईश्वर-परायण (सचिआरा, सत्याचारशाली) होने से परमात्मा से प्रस्फुटित होने वाले गुण; सत्य, प्रेम, परोपकार, दया, धर्म आदि स्वतः जीवात्मा से निकलने लगते हैं। नाम की विधि क्या है? यह भी प्रश्न है। अन्यत्र इसका उत्तर है। प्रथम पउड़ी में प्रश्न से पहले विमर्श है कि ईश्वर का मनन करने से वह मनन में नहीं आता। (क्योंकि प्रभु बुद्धि का विषय नहीं, वह तो इन्द्रियों और मन से परे है)। मौन धारण करके, पूर्ण समाधि लगाने से मन और इन्द्रियों की माया से विरक्ति (विरति) नहीं होती। आत्मा की भूख तीनों पुरों (लोकां) (त्रिपुर, त्रिलोक) का ज्ञान (भार) बांधने से भी नहीं मिटती। (सच्चा नाम ही भूख मिटा सकता है।) प्रभु चतुराई से भी नहीं मिलते।

सोचै सोचि न होवई जे सोची लख वार।
चुपै चुप न होवई जे लाइ रहा लिवतार।
भुखिया भुख न उतरी जे बंना पुरीआ भार।
सहस सिआणपा लख होहि त इक न चलै नालि।
किव सचिआरा होईऐ किव कूड़ै तुटै पालि।
हुकमि रजाई चलणा नानक लिखिआ नालि। [1]

अर्थात् – (गत 'श्लोक' में बतलाया गया है कि परमात्मा शाश्वत सत्य है। जीवन का उद्देश्य पूर्ण करने के लिये उस सत्य को प्राप्त करना आवश्यक है और वह प्राप्त किया जा सकता है। परन्तु किस प्रकार? जब कि) मनन करने से वह मनन में नहीं आता, चाहे मैं लाखों बार मनन करूं (वह बुद्धि का विषय ही नहीं। वह तो इन्द्रियों और मन से परे है)। (मनन का त्याग करके) मौन धारण करने से (मन और इन्द्रियों के विषयों से) मौनिता विरति नहीं होती (अतएव सत्य प्राप्त नहीं होता, 'सुचि होवै ता सचु पाइये') चाहे मैं निरन्तर पूर्ण समाधि लगाए रखूं। (दूसरी ओर, सत्य की प्राप्ति किए बिना) मेरी भूखी इन्द्रियों, भूखे मन तथा आत्मा की भूख शान्त नहीं होती, चाहे मैं चैदह भुवनों के (पदार्थों के) भार भी बांध लूं (''भुखिआ भुख न उतरै, गली भुख न जाइ। नानक भुखा ता रजै जा गुण कहि गुणी समाइ'। 'साचु नामु अधार मेरा जिनि भुखा सभि गवाईआ')। चाहे मैं लाख चातुर्य करूं परन्तु (मेरी) एक भी (भूख नहीं उतारता) क्योंकि, यह चातुर्य उस सत्य तक नहीं पहुंचाता (जहां समस्त लालसाएं समाप्त हो जाती हैं)। (तो फिर) सत्य (सत्यवान, ईश्वर–परायण) कैसे बना जाए? मिथ्या की भित्ति (जो हमारे और परमात्मा के मध्य खड़ी है) कैसे टूटे? (उत्तर है) स्वतन्त्रेच्छाशाली प्रभु के आदेश के अनुसार आचरण करने से (अपनी इच्छा को उस प्रभु की इच्छा मंे मिला देने से), जो आदेश हमारे हृदय में (आरम्भ से) अंकित है (परमात्मा भीतर बसता है। अतः उसका आदेश भी भीतर ही है)। हमारा आचरण उसके आदेश के अनुकूल होना चाहिए। अन्दर रहने वाला प्रभु का आदेश–शब्द अन्दर सुना जा सकता है। चाहे वह धीमा हो जाए परन्तु सर्वथा नष्ट नहीं होता।[3]

'जपुजी साहिब' में 38 पउड़ियों के बाद अन्त में इस वाणी का दूसरा श्लोक विश्व–विख्यात है, जिसमें जीवन/जगत का सार बताया गया है –

पवणु गुरु पाणी पिता माता धरति महतु
दिवसु राति दुइ दाई दाइआ खेलै सगल जगतु
चंगिआईआ बुरिआईआ वाचै धरमु हदूरि
करमी आपो आपणी के नेड़ै के दूरि
जिनी नाम धिआइआ गए मसकति घालि
नानक ते मुख उजले केती छुटी नालि। [1]

अर्थात् – (जगत के जीवों के लिए) पवन मानो गुरु है, (पवन को गुरु कहने का कारण यह है कि शरीर को क्रियाशील रखने के लिए यह ऐसे ही आवश्यक है जैसे आत्मा के लिए गुरु) 'पवन गुरु गुर शब्द है' – (भाई गुरुदास), जल पिता है और पृथ्वी महती माता है (पृथ्वी के उदर में पानी जाने से ही पृथ्वी से वनस्पति तथा अन्य कितने ही पदार्थ उत्पन्न होते

हैं जैसे माता–पिता की रक्त बूंद से बालक का जन्म होता है। अतः पृथ्वी वास्तव में महती माता है और जल पिता है)। दिन खिलाने वाला पुरुष और रात्रि खिलाने वाली स्त्री है। समस्त जगत इसकी गोद में खेल रहा है (काम–काज में संलग्न है) आगे, प्रभु के सम्मुख, धर्मराज (जीवों के) सत्–असत् कर्मों की पड़ताल करता है। अपने–अपने कर्मों के अनुसार कई जीव परमात्मा के निकट हो जाते हैं और कई दूर फैंके जाते हैं। जिन जीवों ने नाम स्मरण किया है, वे श्रममय जीवन सफल कर गये है – (नानक) वे (प्रभु के घर) मुक्त होते हैं और कई अन्य जीव भी उनके साथ (माया के बन्धनांे, जन्म–मरण के चक्रों से तथा कर्मों का फल भोगने से) बच जाते हैं।

'जपुजी साहिब' की व्याख्या–विश्लेषण को गुरवाणी के विद्वानों ने 'टीका' कहा है। प्रिं॰ जगरूप सिंह गिल लिखते हैं कि 'जपुजी साहिब के अंदाजन पचास से ज्यादा 'टीके' उपलब्ध हैं। भाई सन्तोख सिंह ने पहली बार टीका (भावार्थ) लिखा जिसका नाम था 'गरब गंजनी' (पंजाबी में)। अर्थात् जो भी मनुष्य 'जपुजी साहिब' के टीके की व्याख्या को पढ़ेगा, उसका सब प्रकार का अहंकार मिट जायेगा। इसके बाद उदासी और निर्मल सम्प्रदाय, फरीदकोट के सन्तों के 'टीकों' के बाद प्रसिद्ध पंजाबी कवि भाई वीर सिंह, प्रिंसीपल साहिब सिंह, सन्त विनोबा भावे, आचार्य रजनीश का 'जपुजी साहिब' का 'टीका' आया। सभी ने अलग–अलग दृष्टियांे से इस ईश्वरीय ज्ञान के सागर में से डुबकी लगाकर अपनी–अपनी तरह से ज्ञान के मोतियों को चुगा है।' [5]

'जपुजी साहिब' एक सूत्रमयी महान दार्शनिक वाणी है। विद्वानों ने संक्षिप्त और भाव–पूर्ण विचारों की दृष्टि से इसकी 'ईश उपनिषद', 'केकन', 'मुण्डक', 'प्रश्न', 'एत्रिय' और विशेष रूप से 'कठोपनिषद' से समानता बताई है। [6]

'श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में' इसका नाम जपुजी नहीं लिखा हुआ, परन्तु 'गुरु प्रसादि' के बाद 'जपु' लिखा हुआ है और अनुक्रमांक में इसका नाम 'जपु निसाणि' दिया हुआ है। आम प्रसिद्ध नाम 'जपुजी' है। 'जपु' के साथ 'जी' पद का प्रयोग सम्मान–आदर के लिए लिखा जाता है। [7]

यह वाणी 'आदि श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी' की है और यह सिक्खों के अमृत वेला के नितनेम का पाठ है। भाई गुरदास जी ने लिखा है – '*सोदर आरती गावीऐ अम्रित वेले जपु ऊचारा।।*' [8]

'जपुजी साहिब' से पहले मकावाक् (मूल मन्त्र) में अकाल–मूर्त प्रभु के स्वरूप का वर्णन है, जो सिक्ख धर्म का मूल भी माना जाता है। भाई वीर सिंह जी के अनुसार यही श्री गुरु ग्रन्थ साहिब और जपुजी साहिब का भी मंगलाचरण है। [9]

गुरु नानक देव जी द्वारा अध्यात्म के सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण विषय पर लिखी इस रचना सम्बन्धी डाॅ॰ रतन सिंह जग्गी के विचार हैं कि 'यह एक सशक्त और गीता के समान धारावाहक रचना है, जिसमें जीव को ब्रह्म तक पहुंचने के लिए जिन-जिन स्थितियों से गुज़रना पड़ता है, उनका बड़ी सुलझी हुई एवं निपुण शैली में निरूपण किया गया है। प्रत्येक पउड़ी अपनी पूर्ववर्ती पउड़ी एवं परवर्ती पउड़ी की विचार-लड़ी बनकर सिद्धान्त निरूपण को उत्तरोतर सशक्त एवं गंभीर बनाती जाती है। [10]

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि यह रचना 'ईश्वर की सम्पूर्ण व्याख्या' है। गुरु नानक देव जी की महान मानवतावादी वैश्विक (ब्रह्मण्डीय) चेतना की अद्भुत अनभ्ुाूति इस रचना की रस-धारा है। धर्म-सम्प्रदाय, क्षेत्र, राष्ट्रों, रंग, नस्ल, जाति की संकीर्णताओं से मुक्त गुरु नानक देव जी की चेतना हमारी इस धरती से भी परे असंख्य, अगम्य, अनन्त, सीमातीत से भी परे असीम तक विस्तृत है, ठीक सतिनाम, अनादि, शाश्वत निरंजन एक ओंकार की तरह।?

संदर्भ:

1. सिंह, तारन;(1986) गुरु नानक वाणी प्रकाश (भाग पहला) हिन्दी में; पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला; पृ॰ 1.
2. वही; पृ. 2
3. गासो, रविन्द्र;(2022)गुरु नानक कृत:जपुजी साहिब: एक अध्ययन'; अनुज्ञा बुक्स, दिल्ली; प्रथम संस्करण पृ॰ 19-20.
4. सिंह; तारन (1986) गुरु नानक वाणी प्रकाश (भाग पहला) हिन्दी में; पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला;; पृ॰ 19-20.
5. गिल, जगरूप सिंह;(2016) जपुजी साहिब (पंजाबी व अंग्रेजी में); चेतना प्रकाशन, लुधियाना पृ॰ 10
6. सिंह, महीप व मोहन ,नरेन्द्र (सं.1971); गुरु नानक और उनका काव्य; नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली; प्रथम संस्करण 1971 में डाॅ॰ दलीप सिंह दीप का लेख; पृ॰ 210
7. गासो, रविन्द्र (सं.2021); गुरु नानक वाणी: विविध आयाम; अनुज्ञा बुक्स, दिल्ली; प्रथम संस्करण 2021 में डाॅ॰ योगराज का लेख; पृ॰ 64
8. भाई वीर सिंह; जपुजी (सटीक); 1996; पृ॰1 से पहले
9. वही; पृ॰ 1
10. जग्गी, रतन सिंह;(1975) गुरु नानक व्यक्तित्व, कृतित्व और चिन्तन; भाषा विभाग, पंजाब, पटियाला; मार्च 1975; पृ॰237